बी.एस.के.एफ-001

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
2009-10

पाठ्यक्रम कोड :बी.एस.के.एफ.-001
संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम-001
सत्रीय कार्य 2009-10

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी
पाठ्यक्रम कोड :बी.एस.के.एफ-001

प्रिय छात्र/छात्राओ,

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। इसके लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह पाठ्यक्रम कुल 4 क्रेडिट का है। यह सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित है।

उद्देश्य : अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। इस पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा और साहित्य के विविध पक्षों से आपको परिचित कराया गया है। इस अध्ययन से आप संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा इस पाठ्यक्रम में संस्कृति, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान तथा मानविकी से संबंधित पाठों के माध्यम से संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान कराया गया है। इसके साथ ही संस्कृत में वार्तालाप, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन, निबंध, समाचार तथा पत्र-लेखन को भी समझाने का प्रयास किया गया है। सत्रीय कार्य से आप यह जाँच सकेंगे कि आपने पाठ्यक्रम में प्रस्तुत सामग्री को कितना समझा है।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) आधार पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और उस अध्ययन केंद्र का नाम लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :..

नाम :..

पता :..

....

दिनांक :..

पाठ्यक्रम शीर्षक :..

सत्रीय कार्य कोड :..

अध्ययन केंद्र का नाम :...

---

4) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

5) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

7) सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक (Coordinator) के पास भेज दें।

सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि

जुलाई 2009 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए	:	**31 मार्च, 2010**
जनवरी 2010 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए	:	**30 सितंबर, 2010**

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 350-400 शब्दों में लिखने हैं तथा लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 150-200 शब्दों में देने हैं। इसके अलावा, तीसरी श्रेणी के प्रश्न के उत्तर निर्देशानुसार देने हैं।

उत्तर देने के लिए अगर आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ड.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3) **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम-001
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी
पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.के.एफ-001
सत्रीय कार्य कोड : बी.एस.के.एफ-001/टीएमए/2009-10

पूर्णांक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : 5
   क) संस्कृत में व्याकरण को वेद का.................. कहा गया है।
   ख) सुप् प्रत्यय संख्या में 21 हैं तथा प्रत्येक विभक्ति में.......... प्रत्यय और प्रत्येक वचन में ....प्रत्यय होते हैं।
   ग) संस्कृत भाषा में क्रियापद को.......... कहते हैं।
   घ) संसार का प्राचीनतम ग्रंथ.................. है।
   ङ) .... ने चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता पर प्रसिद्ध टीकाएँ लिखी हैं।

2. निम्नलिखित वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए : 10
   ख, य, ठ, स, फ, म, ओ, ऋ, व, ध।

3. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कीजिए : 5
   क) देवपुत्रः
   ख) उपनगरम्
   ग) श्वेताम्बरः
   घ) पञ्चवर्षयः
   ङ) रक्तकमलम्

4. संस्कृत भाषा में काल-विभाजन और लकार के विषय में लगभग 250 शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए। 10

5. "यक्ष-युधिष्ठर-संवाद का सार" विषय पर लगभग 100-125 शब्दों में लेख लिखिए। 5

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 5
   क) नचिकेता ने दूसरे वर में यमराज से क्या माँगा?
   ख) नचिकेता किस ऋषि का पुत्र था?
   ग) वर्तमान चरकसंहिता कितने भागों में विभक्त है?
   घ) रस की उत्पत्ति का आंतरिक कारण क्या था?
   ङ) परिनिष्ठित भाषा किसे कहते हैं?

7. आयुर्वेद से सम्बद्ध संस्कृत के प्रमुख ग्रंथों तथा उनकी विशेषताओं का लगभग 200-250 शब्दों में वर्णन कीजिए। 10

8. निम्नलिखित पद्य की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 10

   अकिञ्चनः सन् प्रभवः स सम्पदां त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः।
   स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः।।

9. प्रतिमानाटक में वर्णित किन्हीं दो रोचक कथा-संवादों को अपनी भाषा में लिखिए। 10

10. अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ ग्रहण के महत्व पर लगभग 100-125 शब्दों में प्रकाश डालिए। 5

11. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण कीजिए : 5

अभिजातमहिमिव लङ्घयति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति। विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति। मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति।

12. "शिक्षायाः महत्त्वम्।" विषय पर **संस्कृत** में निबंध लिखिए। 5

13. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 5

क) अहं पुस्तकं गृहीतुमिच्छामि।
ख) रामः पितुः सह पठति।
ग) तव आगमनः कदा भविष्यति।
घ) आचार्यस्य चरणं स्पृशन्ति।
ङ) देवदत्तो सुखेन शेते।

14. निम्नलिखित वाक्यों का **संस्कृत** में अनुवाद कीजिए : 5

क) मैं राम के साथ जाता हूँ।
ख) बालक पढ़ना चाहते हैं।
ग) दशरथ के पुत्र का नाम भरत था।
घ) बालिका दौड़ती हुई आई।
ङ) गाय वत्स को दूध पिलाती है।

15. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य-परिवर्तन कीजिए : 5

क) सीतया पुस्तकं पठितम्।
ख) जनैः पुस्तकानि नीतानि।
ग) मया प्रतिदिनं वार्ता श्रुता।
घ) रामेण मुनिः वन्द्यते।
ङ) दानशीलः धनिकः भोजनं ददाति।